7:01
Unit-2.pdf
egyankosh.ac.in
1 / 15

मानव भूगोल में अवधारणाएँ

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना
अपेक्षित अध्ययन परिणाम
2.2 मानव भूगोल में अवधारणाएँ
2.2.1 मापक
2.2.2 समय (काल) और जगह / स्थान
2.2.3 क्षेत्र, स्थान और प्रदेश
2.2.4 तंत्र
2.2.5 स्थानकि अंतःक्रिया
2.2.6 अवस्थिति और स्थानिक वितरण
2.2.7 पदानुक्रम और स्थानिक व्यवस्थापन
2.2.8 समाज एव संस्कृति
2.3 सारांश
2.4 अंत में कुछ प्रश्न
2.5 उत्तर
2.6 संदर्भ और अन्य पाठ्य सामग्री

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

2.1 प्रस्तावना

इस खण्ड की पिछली इकाई में आपने मानव भूगोल की परिभाषा, प्रकृति, विषय-क्षेत्र और शाखाओं के बारे में अध्ययन किया है। इस इकाई की शुरुआत हम भौगोलिक अवधारणा शब्द के अर्थ के परिचय के साथ शुरू करते हैं। इसके बाद हम मानव भूगोल की कुछ मूलभूत और व्युत्पन्न अवधारणाओं के अर्थ को परिभाषित करेंगे।

अपेक्षित अध्ययन परिणाम

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- ❖ भौगोलिक अवधारणा का अर्थ परिभाषित कर सकेंगे;
- ❖ मानव भूगोल की मौलिक अवधारणाओं के अर्थ को समझा सकेंगे; तथा
- ❖ मानव भूगोल की अवधारणाओं के महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे।

2.2 मानव भूगोल में अवधारणाएँ

अवधारणाएँ किसी भी विषय की महत्वपूर्ण अंग हैं, क्योंकि वे इसे एक अलग पहचान देती हैं। हालाँकि, एक विषय की मौलिक अवधारणा काफी हद तक उस विषय में अध्ययन किए गए तथ्यों की प्रकृति और उन तथ्यों का अध्ययन करने के लिए अपनाए गए **परिप्रेक्ष्य** या **दृष्टिकोण** पर निर्भर करती है। चूँकि अलग-अलग विषय तथ्यों के

अलग-अलग समूहों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और अलग-अलग परिप्रेक्ष्य का प्रयोग करते हैं, इसलिए उनके पास अवधारणाओं का उनका अपना एक विशिष्ट समूह होता है।

हम अवधारणा को कैसे परिभाषित करते हैं? प्रेस्टन ई. जेम्स (1967) ने अवधारणा को किसी वस्तु या घटना की मानसिक छवि के रूप में परिभाषित किया है। इसका अर्थ उन तथ्यों और अनुभूति से नजदीकी से मिलता जुलता है। उन्होंने किसी व्यक्ति द्वारा अपनी इंद्रियों के माध्यम से किसी वस्तु या घटना के प्रत्यक्ष अवलोकन को अनुभूति या धारणा के रूप में परिभाषित किया है। दूसरे शब्दों में, एक अनुभूति या धारणा एक अनुभवजन्य अवलोकन है - एक अवलोकन जो इंद्रियों के माध्यम से किया गया हो और अनुभव के आधार पर हो। अनुभवजन्य अवलोकन को कभी-कभी एक **तथ्यात्मक कथन** भी कहा जाता है। तथ्य से आशय एक एकल वस्तु, घटना या व्यक्ति से है। धारणा और तथ्यों के विपरीत, अवधारणाएँ समान अनुभवों के समूह की विशेषताओं को प्रदर्शित करती हैं। ये विभिन्न वस्तुओं, घटनाओं या व्यक्तियों में पाई जाने वाली समानता को प्रदर्शित करती हैं। गाँव के उदाहरण के माध्यम से हम धारणा और अवधारणा के बीच के अंतर को समझ सकते हैं। किसी एक गाँव का प्रत्यक्ष और आनुभविक सत्यापन योग्य अवलोकन उस गाँव के बारे में एक अनुभूति या धारणा है। इसके विपरीत, किसी के मन-मस्तिष्क में बनने वाली गाँव की सामान्य मानसिक छवि (यानी सभी गाँवों में पाई जाने वाली

7:01
Unit-2.pdf
egyankosh.ac.in

उस गाँव के बारे में एक अनुभूति या धारणा है। इसके विपरीत, किसी के मन-मस्तिष्क में बनने वाली गाँव की सामान्य मानसिक छवि (यानी सभी गाँवों में पाई जाने वाली समान विशेषताएँ) हमें गाँव की अवधारणा देती है।

कुछ अवधारणाएँ हैं जो मानव भूगोल के अभिन्न अंग हैं। वे इसकी विशिष्ट प्रकृति को चरित्रित करने में उपयोगी हैं। इसलिए इन्हें मानव भूगोल की **मूलभूत अवधारणाओं** के रूप में जाना जाता है। मानव भूगोल की मूलभूत अवधारणाएँ *समय (काल), जगह/स्थान, अवस्थिति, स्थानिक वितरण, स्थानिक अंतःक्रिया सा सम्बन्ध, स्थानिक संरचना, पदानुक्रम, स्थानिक व्यवस्थापन, स्थानिक और पारिस्थितिक धारणा, अनुभूति और व्यवहार, संस्कृति, समाज, विकास और असमानता* हैं। इनमें से कुछ अवधारणाएँ जैसे कि जगह/स्थान, स्थानिक वितरण, स्थानिक अंतःक्रिया और स्थानिक संगठन मानव भूगोल की अपनी **मूल अवधारणाएँ** हैं। दूसरी ओर, समय (काल), समाज, संस्कृति, धारणा, व्यवहार, विकास और असमानता जैसी अवधारणाएँ **व्युत्पन्न अवधारणाएँ** हैं। ये अवधारणाएँ समकक्षी सामाजिक विज्ञान विषयों से ली गई हैं, जैसे कि इतिहास, समाजशास्त्र, नृविज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, आदि।

बोध प्रश्न 1

अवधारणा धारणा और तथ्य से कैसे अलग है?

2.2.1 मापक

भूगोल में मापक मुख्य रूप से जगह/स्थान से सम्बन्धित है। डी. आर. मोंटेलो (2001) के अनुसार, मापक के कम से कम तीन अलग-अलग अर्थ हैं। मानचित्रकला के अर्थ में यह वास्तविक दुनिया की किसी आकृति के आकार का मानचित्र पर उस आकृति के चित्रित सापेक्ष आकार को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार मानचित्र का मापक मानचित्र पर दूरी और धरातल पर वास्तविक दूरी का अनुपात है। उदाहरण के लिए, मानचित्र पर एक सेंटीमीटर धरातल पर 20 किलोमीटर को प्रदर्शित कर सकता है। दूसरा विश्लेषण मापक है, जो किसी क्षेत्रीय इकाई के आकार को संदर्भित करता है जिस पर किसी

समस्या का विश्लेषण किया जाता है, जैसे कि देश, राज्य या जिला स्तर। तथ्य-विषयक/परिघटनात्मक मापक से तात्पर्य उस आकार से है जिस पर भौगोलिक संरचनाएँ मौजूद हैं या जिस पर भौगोलिक प्रक्रियाएँ दुनिया में काम कर रही हैं। भूगोलविदों द्वारा अध्ययन किए गए तथ्य-विषयकों/परिघटना को सूक्ष्म (माइक्रो), समष्टि (मेसो) या वृहत् (मैक्रो) स्थानिक स्तर पर देखा जा सकता है। यह स्थानीय, प्रादेशिक या वैश्विक स्तर पर भी मौजूद हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक समुदाय द्वारा बोली जाने वाली बोली स्थानीय स्तर पर पाई जा सकती है। दूसरी ओर, एक भाषा प्रादेशिक स्तर या वैश्विक स्तर पर पाई जा सकती है।

2.2.2 समय (काल) और जगह/स्थान

समय (काल) और जगह पृथ्वी की सतह पर किसी भी चीज के अस्तित्व की दो मूलभूत वास्तविकताएँ हैं। प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक, इमैनुअल कांट (1724-1804) का विचार था कि समय (काल) और जगह मानव अनुभव की संपूर्ण परिधि को भरते हैं। मानव सहित सब कुछ समय (काल) और जगह के अंतर्गत होता है।

समय (काल) और जगह दोनों को रोजमर्रा के शब्दों के रूप में जाना जाता है, क्योंकि हम सभी अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में समय और जगह सम्बन्धी तथ्यों का सामना करते हैं। परिणामस्वरूप, हम सभी के पास इन शब्दों के बारे में सामान्य समझ है। इसके बावजूद इन अवधारणाओं को परिभाषित करना मुश्किल है। समय (काल) दो लगातार घटित घटनाओं का पृथक्करण है। दूसरी ओर जगह को दो स्थानों के बीच पृथक्करण के रूप में परिभाषित किया गया है।

सारणी 2.1 : वास्तविकता के स्थानिक-सामयिक आयाम

पैमाना	इतिहास (कालानुक्रमिक)	भूगोल (क्षेत्रक्रमिक)	ऐतिहासिक भूगोल (काल/स्थान)
विषय	कालक्रम	क्षेत्रीय-वर्णनी/ क्षेत्र विज्ञान	वर्णनी काललेखी

7:01
Unit-2.pdf
egyankosh.ac.in

		क्षेत्र विज्ञान	
आयाम	सामयिक	स्थानिक	स्थानिक-सामयिक
अध्ययन का केंद्र	अवधि	स्थान	किसी विशेष काल में एक स्थान
गतिशीलता	परिवर्तन	विविधता	सामयिक परिवर्तनों की स्थानिक विविधता
अन्वेषण	प्रवृत्ति	प्रतिरूप	समय के साथ परिवर्तित प्रतिरूप
तकनीक	कथन	वर्णन	कथात्मक वर्णन
उपकरण	समय रेखा	मानचित्र	परिवर्तनशील मानचित्र

परम्परागत रूप से, समय (काल) और जगह की अवधारणाओं का उपयोग क्रमशः इतिहास और भूगोल को परिभाषित करने के प्रारम्भिक बिन्दु के रूप में किया जाता है।

सारणी 2.1 में, वास्तविकता के स्थानिक और लौकिक या सामयिक पहलुओं को प्रस्तुत किया गया है। इतिहास समय (काल) के साथ सम्बन्धित है। इसलिए इतिहासकार वास्तविकता के लौकिक या सामयिक आयाम से मतलब रखते हैं। वे मुख्य रूप से समाज के लौकिक या सामयिक क्रम विकास का अध्ययन करने में रुचि रखते हैं। लेकिन उनमें से कई अक्सर विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों की व्याख्या करने में पृथ्वी के स्थानिक और पारिस्थितिक वास्तविकताओं की अनदेखी कर देते हैं। हालाँकि, सच्चाई यह है कि मानव इतिहास में अब तक जो कुछ भी घटित हुआ है, वह केवल विशिष्ट स्थानों पर हुआ है। दूसरी ओर, भूगोल का सम्बन्ध जगह से है। इसलिए, भूगोलवेत्ता वास्तविकता के स्थानिक आयामों से सम्बन्ध रखते हैं। वे स्थानों की विशेषताओं में अन्तर का वर्णन करते हैं। वे परिघटना के स्थानिक वितरण में समानता का भी वर्णन करते हैं। चूँकि भूगोल को एक 'क्षेत्र' या 'स्थानिक' विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया है, इसलिए कुछ भूगोलवेत्ता पृथ्वी की सतह के अपने अध्ययन में समय (काल) की उपेक्षा करते हैं। हालाँकि, वास्तविकता यह है कि पृथ्वी की सतह पर जहाँ कहीं भी कुछ भी पाया जाता है, वह विशिष्ट समय सीमा (काल अवधि) में होता है और समय के साथ उसमें परिवर्तन होता है। इसलिए भूगोलवेत्ता पृथ्वी के अध्ययन में सामयिक प्रकृति की अनदेखी नहीं कर सकते हैं।

समय (काल) और जगह की अवधारणाओं की परस्पर अन्तर्निर्भरता इतिहास और भूगोल के मध्य घनिष्ठ सहयोग की आवश्यकता का सुझाव देती है। यूनानी इतिहासकार, हेरोडोटस (सी. 485-428 ई.पू.) का विचार था कि 'सम्पूर्ण इतिहास को भौगोलिक रूप से देखना चाहिए और सम्पूर्ण भूगोल को ऐतिहासिक रूप से देखना चाहिए'। हालाँकि भूगोलवेत्ता मुख्य रूप से जगह या स्थान से सम्बन्धित है, इतिहासकार इस अवधारणा की समाज के अपने अध्ययन में अनदेखी नहीं कर सकते। इसी तरह, मानव भूगोलवेत्ता दुनिया के अपने अध्ययन में समय (काल) या लौकिक आयाम की अनदेखी नहीं कर सकते। वे समय (काल) के साथ दुनिया की विशेषताओं में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन करते हैं।

बोध प्रश्न 2

मापक क्या है? समय (काल) और जगह या स्थान क्यों महत्वपूर्ण हैं?

2.2.3 क्षेत्र, स्थान और प्रदेश

भूगोलविदों द्वारा दुनिया को समझने के लिए क्षेत्र, स्थान और प्रदेश की अवधारणा विकसित की गई हैं। क्षेत्र शब्द को सामान्यतः किसी जगह के एक भाग या पृथ्वी की सतह के एक भाग के रूप में परिभाषित किया गया है जिसका एक निश्चित विस्तार और सीमा है। हालाँकि एक क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसका विस्तार और सीमा है, लेकिन यह किसी भी आकार (जैसे बड़े क्षेत्र, मध्यम आकार के क्षेत्र या छोटे क्षेत्र) का हो सकता है। यह एक सामान्य अवधारणा है और इसलिए, इसकी कोई निश्चित अवस्थिति नहीं है।

दूसरी ओर, एक स्थान, अपनी भौतिक और सांस्कृतिक विशेषताओं या कार्यों के सन्दर्भ में विशिष्टता और विलक्षणता से चरित्रित एक निश्चित या अनिश्चित सीमा का एक क्षेत्र है। किसी स्थान की भौतिक विशेषताओं में भू-आकृतियाँ, जलाशय, मृदा, तापमान, वर्षा, वायु, और जीव एवं वनस्पति, जीवन, आदि, जैसी चीजें शामिल हैं। मानव विशेषताओं में मानव

7:01
Unit-2.pdf
egyankosh.ac.in

और जीव एवं वनस्पति, जीवन, आदि, जैसी चीजें शामिल हैं। मानव विशेषताओं में मानव

बस्तियाँ, कारखाने और अन्य इमारतें जैसे अस्पताल, विद्यालय, रक्षा प्रतिष्ठान, सड़कें, रेलवे, भाषा, धर्म, आदि, शामिल हैं।

एक स्थान से आशय या अर्थ पृथ्वी की सतह पर एक विशिष्ट स्थल से है (जो एक आवास से लेकर एक गाँव या शहर हो सकता है)। इसकी एक परिभाषित निरपेक्ष अवस्थिति (अर्थात् पृथ्वी की सतह पर सटीक स्थान), स्थल और स्थिति है। यह अपनी विशेषताओं को भौतिक और मानवीय तत्त्वों के बीच एक लम्बे समय से चल रही निरंतर और गतिशील अन्तर्क्रियाओं के माध्यम से प्राप्त करता है। एक स्थान को लोगों के द्वारा उस स्थान से जोड़े गए अर्थ से भी परिभाषित किया जाता हैं।

एक प्रदेश एक अत्यधिक विकसित अवधारणा है। प्रदेश कुछ विशेष प्रकार की विशेषता से चरित्रित होते हैं जो प्रदेश को एकरूप में एकजुट करती है। इस प्रकार, एक स्थान के विपरीत, एक प्रदेश काफी हद तक एक समरूप क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जाता है जो पृथ्वी की सतह पर विशिष्ट अवस्थिति, पर्याप्त विस्तार और आकार रखता है। प्रदेश औपचारिक, कार्यात्मक, संस्थापित या प्रादेशिक हो सकता है।

बोध प्रश्न 3

क्षेत्र और प्रदेश में क्या अंतर है?

2.2.4 तंत्र

तंत्र एक-दूसरे से अंतःपरस्पर या एक दूसरे से जुड़े हुए तत्त्वों का समूह है – जुड़े हुए सिरों का एक समूह। एक स्थानिक तंत्र को स्थानिक तत्त्वों के तंत्र के रूप में देखा जा सकता है। स्थानिक तत्त्व वे हैं जो पृथ्वी की सतह पर अवस्थित या वितरित तत्त्व हैं। परिवहन तंत्र स्थानिक तंत्र की व्यापक श्रेणी से सम्बन्धित है। दूसरी ओर, जैविक प्रणाली, सामाजिक तंत्र, कार्यालय व्यवस्थापन गैर-स्थानिक तंत्र के उदाहरण हैं। भूगोलवेत्ता विशेष रूप से स्थानिक तंत्र में रुचि रखते हैं।

एक तंत्र और इसकी संयोजकता का प्रतीकात्मक प्रदर्शन रेखाचित्र के रूप में किया जाता है। यह संधियों द्वारा जुड़े आसंधियों या सिरों का एक समूह है। स्थानिक तंत्र के दो सबसे महत्वपूर्ण तत्व शीर्ष (vertex) और छोर (edge or link) हैं। एक आसंधि एक रेखाचित्र का एक अंतिम बिंदु या प्रतिच्छेदन बिंदु है। परिवहन तंत्र में, आसंधि (nodes) के उदाहरण सड़क के चौराहे और परिवहन टर्मिनल (स्टेशन, टर्मिनस, बंदरगाह और हवाई अड्डे) हैं। एक छोर दो आसंधियों के बीच की एक कड़ी है। परिवहन तंत्र में, छोर परिवहन का बुनियादी ढांचा है जो आसंधियों के बीच संचलन में सहयोग करते है। एक छोर दिशा द्वारा चरित्रित होता है।

मानव भूगोलवेत्ता मानव के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तत्वों को पृथ्वी की सतह पर व्यवस्थित और संरचित करने के तरीकों के अध्ययन में रुचि रखते हैं। तंत्र के उदाहरण जहाँ आसंधियों और छोर को धरातल पर स्थापित गया है, वे सड़क तंत्र, रेलवे तंत्र, बिजली तंत्र (पावर ग्रिड), मोबाइल फोन तंत्र, सामाजिक और संपर्क तंत्र, आदि हैं।

बोध प्रश्न 4

आप तंत्र से क्या समझते हैं?

2.2.5 स्थानिक अंतःक्रिया

पृथ्वी की सतह के स्थान एक दूसरे से अलग-थलग नहीं हैं। एक जगह के लोग दूसरी जगहों के लोगों के साथ सम्पर्क और सम्बन्ध बनाते हैं। गाँवों के मध्य, गाँवों और शहरों के मध्य, शहरों के मध्य और बन्दरगाह एवं आन्तरिक प्रदेशों के मध्य अंतःक्रिया होती है। **लोगों, वस्तुओं, सेवाओं, धन, सूचना और विचारों के संचलन और आदान-प्रदान**

Unit-2.pdf
egyankosh.ac.in

लोगों, वस्तुओं, सेवाओं, धन, सूचना और विचारों के संचलन और आदान-प्रदान के कारण स्थानों के बीच स्थापित अंतर्निर्भरता का सम्बन्ध स्थानिक अंतःक्रिया कहलाता है।

1954 में एडवर्ड एल. उल्मैन द्वारा भौगोलिक स्थानों के मध्य अंतर्निर्भरता को इंगित करने के लिए स्थानिक अंतःक्रिया शब्द की रचना की गई थी। उन्होंने इस अंतर्निर्भरता को किसी एक क्षेत्र में समाज-पर्यावरण अंतर्निर्भरता के पूरक के रूप में माना। उन्होंने इसे भौगोलिक जांच का एक प्रमुख केंद्रबिन्दु माना। स्थानिक अंतःक्रिया की अवधारणा 'परिसंचरण भूगोल' की अवधारणा के समान है जो बीसवीं शताब्दी की पहली चौथाई में फ्रांसीसी भूगोल में लोकप्रिय थी। परिसंचरण शब्द का आशय सभी प्रकार के संचलन से है। एडवर्ड उल्मैन ने दो क्षेत्रों के बीच वस्तु प्रवाह के सन्दर्भ में स्थानिक अंतःक्रिया को प्रभावित करने वाले तीन बुनियादी कारकों को परिभाषित किया है। ये है **सम्पूरकता** (क्षेत्र के चरित्र से सम्बन्धित), **हस्तांतरणीयता** (वस्तुओं के चरित्र और संचलन की लागत से सम्बन्धित) और **मध्यवर्ती अवसर** (आपूर्ति के नजदीकी स्रोतों या बाजारों से सम्बन्धित)।

सम्पूरकता क्षेत्रों की विशेषता से सम्बन्धित है। दो प्रदेशों या स्थानों के मध्य अंतःक्रिया के लिए दो शर्तें आवश्यक हैं। पहली, एक जगह पर माँग होनी चाहिए और वह दूसरी जगह से पूरी हो सकती हो। दूसरी, माँग का स्थान आपूर्ति के लिए भुगतान करने में सक्षम होना चाहिए ताकि दो तरफा संचलन का विकास हो। ये स्थितियाँ दो स्थानों को पूरक बनाती हैं, जो परस्पर अंतःक्रिया का आधार है।

हस्तांतरणीयता वस्तुओं की विशेषता से सम्बन्धित है। पूरक क्षेत्रों के बीच अंतःक्रिया केवल तभी होगी, यदि उत्पाद को स्थानान्तरित किया जा सके, यह कुछ हद तक उत्पाद की प्रकृति पर भी निर्भर करता है। किसी उत्पाद की हस्तांतरणशीलता काफी हद तक संचलन की लागत से निर्धारित होती है। किसी उत्पाद का हस्तांतरण तभी हो पाएगा जब परिवहन लागत (यानी आर्थिक दूरी) खरीदार के लिए [illegible] आर्थिक दूरी बढ़ने पर हस्तांतरणीयता कम हो जाती है।

मध्यवर्ती अवसरों से आशय आपूर्ति के नजदीकी स्रोतों या बाजारों की उपलब्धता से हैं। पूरक क्षेत्रों के बीच अंतःक्रिया तभी हो सकती है जब खरीदारों और विक्रेताओं के पास उनकी आवश्यकता को अधिक आसानी से पाने में कोई मध्यवर्ती अवसर न हों। यदि किसी विशेष उत्पाद की आपूर्ति का स्रोत नजदीक हैं तो खरीदार नजदीकी स्रोत से खरीदारी करना चाहते हैं। इसी तरह, अगर कोई वैकल्पिक बाजार केंद्र नजदीक है, तो निर्माता दूर के स्थानों पर स्थित बाजार की बजाय अपने उत्पादों को वहाँ बेच देगा।

पहले, भौगोलिक क्षेत्रों के मध्य अंतःक्रिया **दूरी-क्षय नियम** द्वारा अनुगमित थी, अर्थात् अंतःक्रिया बढ़ती दूरी के साथ कम हो जाती थी और अंततः विलुप्त हो जाती थी। हालाँकि, परिवहन और संचार के साधनों में नवाचारों ने दूर-दराज स्थित भौगोलिक क्षेत्रों के मध्य अंतःक्रिया के स्तर को बढ़ा दिया है। इस कारण से समकालीन दुनिया में

अंतःक्रियाओं के स्वरूप और प्रक्रियाएँ बहुत अधिक जटिल हो गए हैं। हम इस प्रक्रिया को भूमंडलीकरण के रूप में संदर्भित करते हैं, जो कि पृथ्वी की सतह पर विभिन्न स्थानों के मध्य लोगों, विचारों, सूचनाओं, वस्तुओं, सेवाओं, पूँजी इत्यादि के प्रवाह की बढ़ती आसानी और आवागमन की मात्रा द्वारा चरित्रित है।

बोध प्रश्न 5

स्थानिक अंतःक्रिया से आपका क्या अर्थ है?

2.2.6 अवस्थिति और स्थानिक वितरण

मानव भूगोलवेत्ताओं का पृथ्वी की सतह पर स्थानों और परिघटनाओं की अवस्थिति और वितरण का वर्णन और व्याख्या करने से सम्बन्ध है। हालाँकि, मानव भूगोल में उपयोग की गई अवस्थिति और वितरण की अवधारणाओं को ठीक से समझने के लिए किसी को सबसे पहले स्थानिक, वितरण, अवस्थिति, परिघटना और परिमाण की अवधारणाओं को समझना चाहिए। गॉर्डन जे. फील्डिंग (1974) ने निम्नलिखित शब्दों में इन अवधारणाओं के बीच अन्तर किया है। स्थानिक शब्द इंगित करता है कि एक परिघटना पृथ्वी की सतह के एक हिस्से को अधिग्रहित करती है। वितरण एक दूसरे से सम्बन्धित परिघटनाओं का संयोजन हैं। एक परिघटना या उपस्थिति एक विशिष्ट परिमाण की चिन्हित परिघटना है। वितरण एक ही प्रकार की परिघटनाओं की व्यवस्था है।

सतह के एक हिस्से को अधिग्रहित करती है। वितरण एक दूसरे से सम्बन्धित परिघटनाओं का संयोजन हैं। एक परिघटना या उपस्थिति एक विशिष्ट परिमाण की चिन्हित परिघटना है। वितरण एक ही प्रकार की परिघटनाओं की व्यवस्था है।

पृथ्वी की सतह पर मौजूद स्थानों, चीजों, वस्तुओं या परिघटनाओं की स्थिति देखी जा सकती है और मानचित्रण द्वारा निश्चित रूप में निर्धारित की जा सकती है। इस प्रकार, स्थानिक अवस्थिति शब्द को पृथ्वी के धरातल पर एक स्थान, एक चीज, एक वस्तु, या परिघटना के 'कहाँ या किस जगह पर होने' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। दूसरी ओर स्थानिक वितरण शब्द, एक ही प्रकार के स्थानों, चीजों, वस्तुओं या परिघटनाओं के वितरण को दर्शाता है जो पूरी पृथ्वी की सतह या उसके एक हिस्से में फैले हुए हैं। मानव भूगोलवेत्ता पृथ्वी की सतह पर लोगों, उनके घरों, अस्पतालों, कारखानों, दुकानों, सड़कों, रेलवे, अपशिष्ट निष्पादन स्थल, इत्यादि की अवस्थिति और वितरण से सम्बन्ध रखते हैं।

स्थानिक वितरण के तीन पहलू हैं – घनत्व, फैलाव (या संकेंद्रण) और प्रतिरूप। स्थानिक वितरण का घनत्व किसी दिए गए क्षेत्र में एक परिघटना घटने की समग्र आवृत्ति और उस क्षेत्र के क्षेत्रफल के मध्य का सापेक्ष अनुपात है। स्थानिक वितरण का फैलाव (या संकेंद्रण) दिए गए क्षेत्र के क्षेत्रफल के सापेक्ष में एक परिघटना के विस्तार की सीमा है। दूसरी ओर, स्थानिक वितरण का प्रतिरूप क्षेत्र के क्षेत्रफल की परवाह किए बिना एक परिघटना की ज्यामितीय व्यवस्था को संदर्भित करता है।

स्थानिक वितरण प्रतिरूप दो प्रकार के होते हैं – यादृच्छिक वितरण प्रतिरूप और गैर-यादृच्छिक वितरण प्रतिरूप। एक यादृच्छिक वितरण में कोई भी प्रत्यक्ष क्रम नहीं होता है जहाँ वस्तुएँ या परिघटनाएँ संयोग मात्र से ही स्थित होती है। यादृच्छिक वितरण का एक उदाहरण एक जंगल में पेड़ों के मध्य दूरी का प्रतिरूप है, जो न तो संहत या समूहबद्ध है और न ही समरूप है। यादृच्छिक वितरण प्रतिरूप एक से अधिक प्रक्रियाओं के प्रभावों को दर्शाता है। गैर-यादृच्छिक वितरण ऐसी व्यवस्था प्रदर्शित करते हैं, जिसमें

संयोग से कुछ भी होने की संभावना नहीं है। गैर-यादृच्छिक वितरण प्रतिरूप एक समान (व्यवस्थित) या संहत/समूहबद्ध या दोनों का संयोजन हो सकता है। इस तरह के प्रतिरूप को जन्म देने वाली प्रक्रिया या प्रक्रियाएँ या तो किसी परिभाषित क्षेत्र में समान रूप से वितरित हैं या उस क्षेत्र के कुछ भागों या एक भाग में स्थानिक रूप से केन्द्रित हो सकती हैं। समरूप प्रतिरूप में यादृच्छिक प्रतिरूप की तुलना में परिघटनाएँ अधिक नियमित रूप से वितरित होती हैं। उदाहरण के लिए, भौगोलिक रूप से सजातीय क्षेत्र जैसे जलोढ़ मैदानों में गाँवों के एक समरूप प्रतिरूप के उद्भव को देखा जा सकता है।

संहत/समूहबद्ध वितरण में यादृच्छिक वितरण प्रतिरूप की अपेक्षा परिघटनाएँ स्थानिक रूप से अधिक केन्द्रित होती हैं। यदि भौगोलिक परिघटनाएँ निकटता की स्थिति से लाभान्वित होती हैं, तो सामान्यतया, उनका परिणाम एक संहत प्रतिरूप होता है। उदाहरण के लिए, भारत के पुराने शहरों में, बहुधा थोक विशेषता वाली दुकानें मिलती हैं, जैसे लकड़ी के काम, लोहे के काम, अनाज की दुकानें, आदि जो एक दूसरे के साथ नजदीक में स्थित होती हैं। उन्हें स्थानीय रूप से क्रमशः लकड़ी मंडी (लकड़ी बाजार), लोहा मंडी (लोहा बाजार), गल्ला मंडी (अनाज बाजार) के रूप में जाना जाता है। स्थानिक वितरण के प्रतिरूप कुछ अंतर्निहित सिद्धान्तों द्वारा नियन्त्रित होते हैं। मानव भूगोलवेत्ता का कार्य उन सिद्धान्तों की पहचान करना है जो स्थानिक वितरण के एक विशेष प्रतिरूप को जन्म देते हैं।

बोध प्रश्न 6

स्थानिक वितरण क्या है?

2.2.7 पदानुक्रम और स्थानिक व्यवस्थापन

पदानुक्रम आकार, कार्य या महत्त्व के किसी अन्य आधार पर चीजों को श्रेणीबद्ध या क्रमबद्ध करना है। स्थानिक शब्द में कल्पना की जाती है कि दुनिया आकार, कार्यात्मक महत्त्व या भौगोलिक महत्त्व के किसी अन्य आधार पर पदानुक्रम में व्यवस्थित है। पृथ्वी की सतह पर विभिन्न स्थानों और चीजों की श्रेणी या क्रम को स्थानिक पदानुक्रम के रूप में सोचा जा सकता है। एक बहुत ही बुनियादी उदाहरण भारत में बस्तियों का पदानुक्रम है। जनसंख्या के आधार पर, भारत में बस्तियाँ सबसे बड़ी इकाई (यानी महानगरीय शहरों) से लेकर सबसे नन्ही इकाई (यानी पल्ली ग्राम) तक होती हैं। इसी तरह, भारत की जनगणना जनसंख्या के आधार पर शहरी बस्तियों के पदानुक्रम को परिभाषित करती है। स्थानिक पदानुक्रम का एक और उदाहरण

Unit-2.pdf
egyankosh.ac.in

तक होती हैं। इसी तरह, भारत की जनगणना जनसंख्या के आधार पर शहरी बस्तियों के पदानुक्रम को परिभाषित करती है। स्थानिक पदानुक्रम का एक और उदाहरण प्रादेशिक पदानुक्रम हो सकता है। एक प्रदेश समान श्रेणी के प्रदेशों के पदानुक्रम में एक नियत स्थान रखता है। इस पदानुक्रम में, क्रमिक रूप से उच्चतर श्रेणी के प्रदेश में उससे निचली श्रेणी के कई प्रदेशों का एकत्रीकरण होता हैं। उदाहरण के लिए, भारत का सम्पूर्ण क्षेत्र 6 जल संसाधन प्रदेशों द्वारा गठित है। प्रत्येक जल संसाधन प्रदेश कई द्रोणियों (जो बड़ी नदी, नदियों या छोटी नदियों के समूह जो एक दूसरे से मिली हुई हैं) के गठन से बना है। एक द्रोणी कई जलग्रहण क्षेत्रों (जो मुख्य सहायक नदियों या सन्निहित सहायक नदियों के एक समूह या व्यक्तिगत धाराओं से सम्बन्धित है) को मिलाकर बनती है, एक जलग्रहण क्षेत्र में कई उप-जलग्रहण क्षेत्र हैं (जो मुख्य रूप से छोटी सहायक नदियाँ और धाराएँ हैं) और एक उप-जलग्रहण क्षेत्र में कई जलविभाजन क्षेत्र (वाटरशेड) (जो बृहत् स्तर श्रेणी में सबसे छोटी आकार की जलविज्ञानिक (हाइड्रोलॉजिक) इकाइयाँ हैं) शामिल हो सकते हैं। एक जलविभाजन क्षेत्र का निर्माण

कई उप-जलविभाजन क्षेत्रों द्वारा किया जाता है (जहाँ मुख्य सहायक नदियों और धाराओं को उप-जलविभाजन क्षेत्रों के परिसीमन के लिए लिया जाता है), जो कई सूक्ष्म जलविभाजन क्षेत्रों (सबसे छोटी जलविज्ञानिक इकाई) द्वारा गठित किया जाता है।

बस्तियों का आकार बहुधा उनके मध्य अंतःक्रिया का स्तर निर्धारित करता है। अगर अन्य चीजें बराबर रहती हैं, कम जनसंख्या वाली बस्तियों की तुलना में अधिक जनसंख्या वाली बस्तियों के मध्य उच्च मात्रात्मक अंतःक्रिया होगी। उदाहरण के लिए, दिल्ली और मुंबई कार्यात्मक रूप से अधिक नजदीक और घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं (दोनों के मध्य लोगों, वस्तुओं, सेवाओं, सूचना, आदि के संचलन के माप के सन्दर्भ में) जबकि देहरादून दूरी के हिसाब से दिल्ली के अधिक पास हैं। मुम्बई और दिल्ली, दिल्ली और देहरादून की तुलना में अधिक दूर स्थित होने के बावजूद यह होता है। स्थानिक पदानुक्रम की अवधारणा का उपयोग बहुधा किसी देश के प्रशासन और विकास की योजना बनाने में किया जाता है। उदाहरण के लिए, प्रशासनिक उद्देश्य के लिए देश को राज्यों और जिलों में विभाजित किया जाता है। विकास की योजना के लिए राज्य को अलग-अलग स्थानिक श्रेणी, अर्थात् जिलों, प्रखण्डों और पंचायतों और राजस्व गांवों के एक पदानुक्रम में विभाजित किया जाता है।

स्थानिक व्यवस्थापन की अवधारणा को समझने के लिए पिछले अनुभागों में उल्लेखित की गई जगह, अवस्थिति, वितरण, अंतःक्रिया और पदानुक्रम की अवधारणाओं को ध्यान में रखना होगा। हम जानते हैं कि मानव भूगोल का सम्बन्ध पृथ्वी की सतह पर मानव निर्मित विशिष्टाओं और मानव गतिविधियों से है। मानव निर्मित आकृतियों के उदाहरण मकान, पल्ली ग्राम और गांव, नगर और शहर, सड़क, रेलवे, उद्यान, क्रीड़ा-स्थल, औद्योगिक संयंत्र, टंकियाँ और बाँध, हवाई अड्डे, आदि हैं। मानवीय गतिविधियों के उदाहरणों में स्थानिक (जैसे संचलन) आर्थिक (जैसे कृषि, उद्योग और सेवाएँ), राजनीतिक (जैसे एक नागरिक के रूप में राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेना) और सांस्कृतिक गतिविधियाँ (जैसे विभिन्न सांस्कृतिक कलाकृतियों को सीखना और बनाना) शामिल हैं। **मानव निर्मित आकृतियों और मानव गतिविधियों को सामूहिक रूप से (मानव) भौगोलिक परिघटना के रूप में जाना जाता है।** मानव भूगोलवेत्ता इन परिघटनाओं के स्थानिक रूप या दिखावट से सम्बन्ध रखते हैं जैसा कि उनकी अवस्थिति, वितरण और संरचना में व्यक्त किया गया है। इन परिघटनाओं का स्थानिक विश्लेषण हमें सूचित करता है कि पृथ्वी की सतह पर प्रतिरूप और नियमितताएँ हैं। उदाहरण के लिए, पृथ्वी की सतह पर मानव परिघटना की अवस्थिति और वितरण में क्रमबद्धता है।

स्थानिक वितरण के समान, कुछ क्रमबद्धता और नियमितता आमतौर पर स्थानों के बीच अंतःक्रिया के प्रतिरूपों में देखी जाती है। हम जानते हैं कि स्थानों के मध्य अंतःक्रिया का स्तर काफी हद तक उनकी जनसंख्या के आकार (साथ ही साथ उनके कार्यात्मक महत्त्व) और उनके बीच की भौतिक दूरी पर निर्भर करता है। इसलिए, हम बहुधा पाते हैं कि बड़े आकार की बस्तियों के मध्य अंतःक्रिया का स्तर छोटे आकार की बस्तियों के मध्य अंतःक्रिया की तुलना में अधिक है। इसी तरह पास-पास स्थित बस्तियाँ आमतौर पर दूर-दूर स्थित बस्तियों की तुलना में नजदीकी रूप से सम्बद्ध होती हैं। इस प्रकार स्थानिक अवस्थिति, वितरण और अंतःक्रिया के प्रतिरूपों को नियन्त्रित करने वाले कुछ सिद्धान्त पाए जाते हैं। परिणामस्वरूप, अवस्थिति की स्थानिक अभिव्यक्ति और मानवीय गतिविधियों, स्थानों और वस्तुओं का पृथ्वी की सतह पर वितरण और स्थानों के मध्य अंतःक्रिया सामान्यतः कुछ क्रमबद्धता का पालन करते हैं।

7:02
Unit-2.pdf
egyankosh.ac.in

स्थानिक व्यवस्थापन का स्थानिक वातावरण में मानव व्यवहार के विश्लेषण से सम्बन्ध है। इसका आशय भौगोलिक क्षेत्र को व्यवस्थित करने के तरीके - लोगों की स्थानिक व्यवस्था, मानव निर्मित आकृतियाँ, उनकी गतिविधियाँ और संस्थान और स्थानों के मध्य सम्पर्क है। उदाहरण के लिए आर्थिक भूगोलवेत्ता, विनिर्माण, कृषि, शहरीकरण और परिवहन तंत्र जो इन गतिविधियों को एक साथ जोड़ता है, जैसी आर्थिक गतिविधियों के स्थानिक वितरण का अध्ययन करते हैं। इसी तरह नगरीय भूगोलवेत्ता विभिन्न आकारों के शहरी केन्द्रों के स्थानिक वितरण के प्रतिरूपों का अध्ययन करते हैं। भारत में शहरी बस्तियों का स्थानिक व्यवस्थापन सामान्यतः निम्नलिखित पदानुक्रमित प्रतिरूप का अनुसरण करता है: *बड़े शहर संख्या में कम हैं और व्यापक दूरी पर प्रतिस्थापित हैं। जैसे-जैसे शहरी केंद्रों का आकार घटता जाता है उनकी संख्या में वृद्धि होती है और उनके बीच औसत दूरी कम होती जाती है। दूसरे शब्दों में, बड़े शहरों की तुलना में, छोटे शहरों और कस्बों की संख्या बहुत हैं और उनमें औसत दूरी कम है।*

मानव भूगोलवेत्ताओं की सम्बद्धता केवल भू-भाग की मौजूदा व्यवस्था और उनकी उस विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था के पीछे निहित तर्कसंगतता को पहचानने और समझाने तक सीमित नहीं है। वे भू-भाग की मौजूदा व्यवस्था पर सवाल उठाने और स्थानिक पुनर्व्यवस्थापन (यानी प्रादेशिक योजना) के लिए सुझाव देना भी उनका काम है। इसके आलोक में मानव भूगोल के छात्र निम्नलिखित प्रश्न उठाते हैं:

1. ये कहाँ है? (यानी अवस्थिति और वितरण)
2. ऐसा क्यों है? (यानी अवस्थिति और वितरण के मौजूदा प्रतिरूप के कारण)
3. क्या यह न्यायसंगत या उचित है? (यानी भू-भाग की मौजूदा व्यवस्था के लिए तर्क)
4. क्या होना चाहिए? (यानी एक आदर्श रूप से व्यवस्थित भू-भाग का प्रतिरूप)
5. पूर्वनिर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हस्तक्षेप और प्रत्यक्ष परिवर्तन कैसे करें (अर्थात् पुनः व्यवस्थापन, वितरण और अन्तरक्रिया के लिए नीति नियोजन का प्रस्ताव)

बोध प्रश्न 7

स्थानिक व्यवस्थापन से आप क्या समझते हैं?

2.2.8 समाज और संस्कृति

समाज और संस्कृति मानव भूगोल की महत्वपूर्ण व्युत्पन्न अवधारणाएँ हैं। जब एक से अधिक व्यक्ति एक साथ रहते हैं तो वे आपस में सम्पर्क करते हैं जिससे उनके बीच कुछ प्रकार के सम्बन्ध विकसित होते हैं। समाज को एक क्षेत्र में एक साथ रहने वाले लोगों के बीच सम्बन्धों या अंतःक्रिया के तंत्र के रूप में परिभाषित किया गया है। व्यक्तियों के मध्य अंतःक्रिया की प्रकृति सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक या धार्मिक हो सकती है। उदाहरण के लिए एक कारखाने के मालिक और कामगार के बीच सम्बन्ध आर्थिक अंतःक्रिया का एक उदाहरण है। और व्यक्तियों के बीच अंतःक्रिया की प्रकृति सहकारी, सामंजस्यपूर्ण, प्रतिस्पर्धी, सहमति और संघर्षपूर्ण हो सकती है। समाज मूलतः ऐसे सामाजिक सम्बन्धों का जाल है।

समाज एक समग्र अवधारणा है। इसमें न केवल व्यक्तियों बल्कि विभिन्न समूहों, समुदायों, संघों और संस्थानों को भी शामिल किया गया है। समाज के महत्वपूर्ण संस्थान सामाजिक (विवाह और सगोत्रता/रक्त-सम्बन्ध), राजनीतिक (जैसे राज्य), आर्थिक (जैसे कारखाने), कानूनी (जैसे न्यायालय), शैक्षिक (जैसे विद्यालय), स्वास्थ्य (जैसे अस्पताल), आदि हैं। एक व्यक्ति इनमें से किसी एक या कई संस्थानों का सदस्य हो सकता है। सदस्य के रूप में वे अपने संस्थानों के साथ अंतःक्रिया करते हैं। नागरिक और राज्य के बीच सम्बन्ध राजनीतिक अंतःक्रिया का एक उदाहरण है। इस तरह से समाज विभिन्न प्रकार की अंतःक्रियाओं द्वारा गठित किया जाता है।

मनुष्य दुनिया के विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों में निवास करते हैं। प्रत्येक प्रदेश में, वे न केवल अपने समाज के सदस्यों और संस्थानों के साथ अंतःक्रिया करते हैं बल्कि जटिल तरीकों से अपने (प्राकृतिक) वातावरण के साथ भी अंतःक्रिया करते हैं। समाज में परस्पर क्रिया के विविध प्रतिरूपों के कारण विभिन्न भौगोलिक वातावरणों में विभिन्न प्रकार की उत्पादन की प्रणालियाँ, आजीविका के साधन और सामाजिक सम्बन्ध उभरते हैं। ये शिकार, वन उत्पाद इकट्ठा करना, मछली पकड़ना, बागवानी, फूलों की खेती, पशुपालन,

7:02
Unit-2.pdf
egyankosh.ac.in

शिकार, वन उत्पाद इकट्ठा करना, मछली पकड़ना, बागवानी, फूलों की खेती, पशुपालन, कृषि, उद्योग और सेवाएँ हैं।

मानव भूगोलवेत्ताओं का एक महत्वपूर्ण कार्य दुनिया के विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों में अवस्थित समाजों में भिन्नताओं का व्यवस्थित लेख प्रदान करना है। इन समाजों का गठन लोगों के लोगों से सम्बन्धों के विभिन्न प्रतिरूपों के साथ-साथ लोगों के पर्यावरण से सम्बन्धों से होता है। मानव भूगोलवेत्ता सामाजिक अंतःक्रियाओं और उत्पादन की प्रणालियों की प्रकृति के आधार पर मानव समाज को व्यापक रूप से सरल समरूप और जटिल विषमरूप में विभाजित करते हैं। ग्रामीण-आदिवासी समाज सरल समरूप समाज के उदाहरण हैं। दूसरी ओर, शहरी-औद्योगिक समाज, उत्पादन की प्रणाली की जटिलता और श्रम विभाजन के कारण जटिल विषमरूप समाजों की श्रेणी में आते हैं।

आइए अब हम संस्कृति के बारे में चर्चा करते हैं। संस्कृति के प्रथम पहलू में सभी मानव सृजित कृतियाँ शामिल हैं। पृथ्वी पर अपनी उत्पत्ति से लेकर मनुष्यों ने जो कुछ भी सृजित किया है वे सांस्कृतिक वस्तुएँ हैं। इस पहलू में शिकार, कृषि, गृह निर्माण, वस्त्र निर्माण के औजार, प्रौद्योगिकी की तकनीक, औजार तकनीक, उपकरण और अन्य प्रथाएँ शामिल हैं। ये संस्कृति की सामग्री, उद्देश्य और ठोस पहलू हैं। संस्कृति के द्वितीय पहलू में मानव व्यवहार शामिल है। व्यवहार का अर्थ है मनुष्यों की सोच और भावनाओं के साथ-साथ उनके बाहरी क्रियाएँ। हालाँकि, किसी व्यक्ति विशेष के व्यवहार को संस्कृति नहीं माना जा सकता। यह संस्कृति का एक हिस्सा बन जाता है जब समाज के अधिकांश सदस्य इसे साझा करते हैं।

मानव भूगोल में संस्कृति भौतिक और गैर-भौतिक संस्कृति के भौगोलिक पहलुओं और अभिव्यक्तियों को संदर्भित करती है। मानव भूगोलवेत्ता संस्कृति के भौतिक और गैर-भौतिक पहलुओं का दो अलग-अलग तरीकों से अध्ययन करते हैं। पहले, वे भौगोलिक पर्यावरण के सम्बन्ध में संस्कृति की विशेषताओं और विकास का अध्ययन करते हैं। एक समाज की संस्कृति उसके भौगोलिक वातावरण से घनिष्ठता से सम्बन्धित है। मरुस्थलीय वातावरण में रहने वाले लोगों की भोजन सम्बन्धी आदतें, कपड़े, घर के प्रकार और जीवन शैली पहाड़ी या तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों से भिन्न होती हैं। भौगोलिक पर्यावरण में खुद को ढालने या अपने परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित करने की

प्रक्रिया में, मानव संस्कृति का निर्माण और विकास करता है। मानव भूगोलवेत्ता इस बात से सम्बन्ध रखते हैं कि भौगोलिक पर्यावरण के सम्बन्ध में किसी समाज की संस्कृति धीरे-धीरे प्रागैतिहासिक समय से वर्तमान समय तक कैसे विकसित हुई।

दूसरे, मानव भूगोलवेत्ता भू-भाग पर और समय-अंतराल में संस्कृति के प्रसार का अध्ययन करते हैं। संस्कृति के विशिष्ट तत्त्व जो विशेष स्थानों में विकसित होते हैं, अन्य स्थानों पर फैल जाते हैं। उदाहरण के लिए बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम विशिष्ट स्थानों पर उत्पन्न हुए। समय के साथ ये धर्म दूर-दराज के स्थानों तक फैल गए। इसी प्रकार, भाषाएँ और बोलियाँ, जैसे कि अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश और भोजपुरी, जो ऐतिहासिक रूप से स्थान विशेष पर उत्पन्न हुई थीं, अब दुनिया के कई देशों में बोली जाती हैं।

हालाँकि मानव भूगोलवेत्ता भू-भाग के सामाजिक व्यवस्थापन को समझने के लिए समाज और संस्कृति की अवधारणाओं का उपयोग करते हैं, लेकिन उनके बीच अन्तर हैं। संस्कृति अक्सर नृविज्ञान से जुड़ी होती है और इसलिए मुख्य रूप से सांस्कृतिक भूगोल में इसका अध्ययन किया जाता है। दूसरी ओर, समाज की अवधारणा समाजशास्त्र से ली गई है और इसलिए इसका अध्ययन ज्यादातर सामाजिक भूगोल में किया जाता है। हालाँकि दोनों सामाजिक और सांस्कृतिक भूगोल मानव भूगोल के हिस्से हैं। मानव भूगोलवेत्ताओं के पारम्परिक रूप से नृविज्ञान या मानव शास्त्र के साथ अपने निकट सम्बन्ध रहे हैं (शुरुआत में मानव भूगोल को मानवशास्त्रभूगोल के रूप में जाना जाता था) और इसलिए सांस्कृतिक अवधारणा के साथ भी है। लेकिन बाद में, उन्होंने समाजशास्त्र से बहुत कुछ लिया। परिणामस्वरूप, भू-भाग की व्यवस्था को समझने के लिए समाज और सामाजिक संरचना की अवधारणाएँ बहुत महत्वपूर्ण हो गई हैं।

बोध प्रश्न 8

समाज और संस्कृति के बीच क्या अन्तर हैं?

2.3 सारांश

इस इकाई में आपने अध्ययन किया है:

2.3 सारांश

इस इकाई में आपने अध्ययन किया है:

- भौगोलिक अवधारणा शब्द का अर्थ
- मानव भूगोल की कुछ महत्वपूर्ण मूल और व्युत्पन्न अवधारणाओं की परिभाषाएँ, जैसे कि:
  - मापक
  - समय (काल) और जगह/स्थान
  - क्षेत्र, स्थान और प्रदेश
  - तन्त्र
  - स्थानिक अंतःक्रिया
  - अवस्थिति और स्थानिक वितरण

- पदानुक्रम और स्थानिक व्यवस्थापन, और
- समाज और संस्कृति।

2.4 अंत में कुछ प्रश्न

1. मानव भूगोल की अवधारणाओं की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
2. मानव भूगोल के सन्दर्भ में मापक, समय (काल) और जगह/स्थान की चर्चा कीजिए।
3. क्षेत्र, स्थान और प्रदेश के मध्य अन्तर लिखिए।
4. आप तन्त्र से क्या समझते हैं? स्थानिक अंतःक्रिया के विभिन्न कारकों के साथ स्थानिक अंतःक्रिया को समझाने में तन्त्र के महत्त्व का वर्णन कीजिए।
5. स्थानिक अंतःक्रिया के अर्थ की व्याख्या कीजिए।
6. अवस्थिति क्या है? स्थानिक वितरण की अवधारणा पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
7. मानव भूगोल में अध्ययन किए गए स्थानिक पदानुक्रम और स्थानिक व्यवस्थापन की अवधारणा को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
8. समाज और संस्कृति क्या हैं? मानव भूगोल के अध्ययन में समाज और संस्कृति के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

2.5 उत्तर

बोध प्रश्न

1. तथ्य से आशय किसी एकल वस्तु, घटना या व्यक्ति से है। धारणा संवेदी अंगों के माध्यम से किसी चीज या घटना का किया गया गया प्रत्यक्ष अवलोकन या अनुभव है। दूसरी ओर अवधारणा उन विशेषताओं को प्रदर्शित करती है जो कई घटनाओं, वस्तुओं या व्यक्तियों में समान हैं।

2. मापक की अवधारणा जगह/स्थान से सम्बन्धित है। मानचित्र का मापक जमीन पर सम्बन्धित दूरी और मानचित्र पर दूरी का अनुपात है। समय (काल) और जगह/स्थान पृथ्वी की सतह पर वास्तविकताओं या परिघटनाओं के अस्तित्व के दो मूलभूत गुण हैं। दूसरे शब्दों में, पृथ्वी की सतह पर कहीं भी कुछ भी पाया जाता है वो विशिष्ट समय सीमा में होता है और समय के साथ बदलता है। समय वास्तविकता और जगह/स्थान को लौकिक या सामयिक आयाम प्रदान करता है, दूसरी ओर जगह/स्थान वास्तविकता का स्थानिक आयाम देता है।

3. क्षेत्र शब्द को आम तौर पर भू-भाग या पृथ्वी की सतह के एक भाग के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके आकार की एक निश्चित सीमा होती है, जबकि किसी स्थान को उसकी भौतिक और सांस्कृतिक विशेषताओं या कार्यों की विशिष्टओं से चरित्रित एक निश्चित या अनिश्चित सीमा के क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जाता है। दूसरी ओर एक प्रदेश पृथ्वी की सतह पर विशिष्ट

परिभाषित किया जाता है। दूसरी ओर एक प्रदेश पृथ्वी की सतह पर विशिष्ट अवस्थिति, पर्याप्त विस्तार और आकार वाला एक समरूप क्षेत्र है।

4. तंत्र एक-दूसरे से अन्तःपरस्पर या एक दूसरे से जुड़े हुए सम्बद्ध तत्त्वों का समूह है - बद्ध सिरों का एक समूह या यह अंतःपरस्पर संबद्ध रेखाओं/वृत्त-चाप की एक प्रणाली है। एक स्थानिक तंत्र को स्थानिक तत्वों के तंत्र के रूप में देखा जा सकता है।

5. स्थानिक अंतःक्रिया की अवधारणा से आशय स्थानों के बीच लोगों, वस्तुओं, सामाग्री, सेवाओं, धन, सूचना, विचारों आदि के संचलन से है।

6. स्थानिक अवस्थिति पृथ्वी के सतह पर किसी स्थान, एक चीज, एक वस्तु या घटना के 'कहाँ' या 'किस जगह पर स्थित' होने को बताती है। स्थानिक वितरण की अवधारणा एक ही प्रकार के स्थानों, चीजों, वस्तुओं या घटनाओं के वितरण को दर्शाती है जो पूरी पृथ्वी की सतह या उसके एक भाग पर फैली हुई हैं।

7. स्थानिक पदानुक्रम से आशय आकार, कार्य या महत्त्व के किसी अन्य आधार पर भौगोलिक परिघटनाओं की श्रेणीबद्धता या क्रमबद्धता है। दूसरी ओर, स्थानिक व्यवस्थापन की अवधारणा से आशय भू-भाग पर भौगोलिक परिघटना व्यवस्थित होने के तरीके से है, अर्थात् लोगों की स्थानिक व्यवस्था, मानव-सृजित आकृतियाँ, उनकी गतिविधियाँ और संस्थान और स्थानों के बीच सम्पर्क।

8. समाज की अवधारणा अपने अन्दर न केवल व्यक्तियों बल्कि विभिन्न समूहों, समुदायों, संघों और संस्थानों और उनके मध्य अंतःक्रिया के जाल तन्त्र या नेटवर्क को भी शामिल करती है। संस्कृति समाज का केवल एक भाग है, जिसमें मानव व्यवहार और उनकी सभी रचनाएँ शामिल हैं। समाज और संस्कृति दोनों की एक महत्वपूर्ण विशेषता उनकी स्थानिकता है। दोनों पृथ्वी की सतह पर ना-ना प्रकार से वितरित हैं और विभिन्न समाजों और संस्कृतियों के मध्य सम्बन्धों की मध्यस्थता भू-भाग द्वारा की जाती है।

अंत में कुछ प्रश्न

1. समझाइए कि अवधारणा क्या है और यह तथ्य और धारणा से कैसे अलग है, इसके बाद मानव भूगोल में प्रमुख अवधारणाओं का संक्षिप्त विवरण दीजिए। अनुभाग 2.2 का सन्दर्भ लीजिए।

2. आप अपने उत्तर की शुरुआत मानव भूगोल के सन्दर्भ में मापक की परिभाषा और प्रकार के साथ कर सकते हैं और फिर मानचित्र मापक, विश्लेषण मापक और परिघटना मापक के मध्य भेद को स्पष्ट कर सकते हैं। वास्तविकता से सम्बद्ध समय (काल) और जगह/स्थान के महत्त्व पर चर्चा कीजिए। आप वास्तविकता के स्थानिक-लौकिक/सामयिक आयामों की व्याख्या कर सकते हैं। अनुभाग 2.2.1 और 2.2.2 का सन्दर्भ लीजिए।

3. आप क्षेत्र, स्थान और प्रदेश को परिभाषित करें और उपयुक्त उदाहरणों के साथ भेद की व्याख्या कर सकते हैं। अनुभाग 2.2.3 का सन्दर्भ लीजिए।

4. पहले यह बताइए कि तंत्र क्या है और स्थानिक अंतःक्रिया को समझाने में तंत्र के महत्त्व पर चर्चा कीजिए। अनुभाग 2.2.4 और 2.2.5 का सन्दर्भ लीजिए।

5. स्थानिक अंतःक्रिया के विभिन्न कारकों जैसे हस्तांतरणीयता, संपूरकता और मध्यवर्ती अवसर के साथ स्थानिक अंतःक्रिया का अर्थ लिखिए। अनुभाग 2.2.5 का सन्दर्भ लीजिए।

6. पृथ्वी की सतह पर स्थिति के सन्दर्भ में पहले अवस्थिति की व्याख्या कीजिए। फिर आप स्थानिक वितरण प्रतिरूपों के बारे में लिख सकते हैं। अनुभाग 2.2.6 का सन्दर्भ लीजिए।

7. आप अपने उत्तर की शुरुआत उदाहरण सहित पदानुक्रम की परिभाषा के साथ कर सकते हैं उसके बाद स्थानिक व्यवस्थापन पर चर्चा कीजिए। अनुभाग 2.2.7 का सन्दर्भ लीजिए।

परिघटना मापक के मध्य भेद को स्पष्ट कर सकते हैं। वास्तविकता से सम्बद्ध समय (काल) और जगह/स्थान के महत्त्व पर चर्चा कीजिए। आप वास्तविकता के स्थानिक-लौकिक/सामयिक आयामों की व्याख्या कर सकते हैं। अनुभाग 2.2.1 और 2.2.2 का सन्दर्भ लीजिए।

3. आप क्षेत्र, स्थान और प्रदेश को परिभाषित करें और उपयुक्त उदाहरणों के साथ भेद की व्याख्या कर सकते हैं। अनुभाग 2.2.3 का सन्दर्भ लीजिए।

4. पहले यह बताइए कि तंत्र क्या है और स्थानिक अंतःक्रिया को समझाने में तंत्र के महत्त्व पर चर्चा कीजिए। अनुभाग 2.2.4 और 2.2.5 का सन्दर्भ लीजिए।

5. स्थानिक अंतःक्रिया के विभिन्न कारकों जैसे हस्तांतरणीयता, संपूरकता और मध्यवर्ती अवसर के साथ स्थानिक अंतःक्रिया का अर्थ लिखिए। अनुभाग 2.2.5 का सन्दर्भ लीजिए।

6. पृथ्वी की सतह पर स्थिति के सन्दर्भ में पहले अवस्थिति की व्याख्या कीजिए। फिर आप स्थानिक वितरण प्रतिरूपों के बारे में लिख सकते हैं। अनुभाग 2.2.6 का सन्दर्भ लीजिए।

7. आप अपने उत्तर की शुरुआत उदाहरण सहित पदानुक्रम की परिभाषा के साथ कर सकते हैं उसके बाद स्थानिक व्यवस्थापन पर चर्चा कीजिए। अनुभाग 2.2.7 का सन्दर्भ लीजिए।

8. पहले समाज और संस्कृति को परिभाषित कीजिए और मानव भूगोल के अध्ययन में इनके महत्त्व को बताइए। अनुभाग 2.2.8 का सन्दर्भ लीजिए।

2.6 सन्दर्भ और अन्य पाठ्य सामग्री

1. Clifford, Nicholas J. and Valentine, Gill (2003). "Getting Started in Geographical Research: how this book can help" in Clifford, Nicholas J. and Valentine, Gill (eds.). *Key Methods in Geography*, New Delhi: Sage, pp. 1-16.
2. Dikshit, R. D. (1994). *The Art and Science of Geography. Integrated Readings*, New Delhi: Prentice-Hall of India Private limited.
3. Fielding, Gordon J. (1974). *Geography as a Social Science,* New York: Harper and Row.
4. Golledge, Reginald G. (1996). "Geographical Theories", *International Social Science Journal*, Vol. 48, Issue 150, pp. 461-476.
5. Gregory, Derek et al. (2009). *The Dictionary of Human Geography*, eds. Oxford: Wiley-Blackwell.
6. Husain, Majid (2010). *Human Geography*, Jaipur: Rawat Publications.
7. Knowles, R. and Wareing, J. (1986). *Economica and Social Geography Made Simple*, New Delhi: Rupa and Co.
8. Limb, Melanie and Dwyer, Claire (2001). "Introduction: doing qualitative research in geography", in Limb, Melanie and Dwyer, Claire (eds.). *Qualitative Methodologies for Geographers: Issues and Debates*, London: Arnold, pp. 1-22.
9. Montello, D. R. (2001). "Scale in Geography" In Smelser, N.J. & Baltes, P.B. (eds.), *International Encyclopedia of the Social & Behavioral Sciences*, Oxford: Pergamon Press, pp. 13501-13504.
10. Rubenstein, James M. (2012). *Contemporary Human Geography*, New Delhi: PHI Learning Private Limited.
11. Rubenstein, James M. and Bacon, Robert, S. (1990). *The Cultural Landscape: An Introduction to Human Geography*, New Delhi: Prentice-Hall of India Private Limited.